Lord Akash Bhairav Pakshiraj Mantra Sadhana

भगवान् आकाशभैरव (पक्षिराज) मंत्र साधना

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

महान् ओज से सम्पन्न, मंत्रों के स्वामी, असंख्य गुणों वाले, अनन्तास्वरूप, देवताओं की अक्षय निधि, शिवावतार, क्रोधराज आकाशभैरव की अद्भुत लीलाओं और आलौकिक रहस्यों को उनके अतिरिक्त संसार में कौन समझ सकता है, अगर समझा जा सकता है तो केवल प्रेम और निश्चल भक्ति से, बुद्धि और

चपलता से कदापि नहीं। फिर भी अपने अल्पज्ञान से जो तंत्रशास्त्रों में समझा और जो स्वयं अनुभव किया उसी का मिश्रित सार महादेव और गुरुदेव महाराज के तेजपुंज से प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं।

देवाधिदेव महादेव जगत् के कल्याण एवं रक्षण हेतु स्वेच्छापूर्वक कई स्वरूपों में प्रकट हुए हैं। इनमें सबसें विचित्र, दुर्गम, अत्यन्त उग्र एवं महाभयंकर स्वरूप है- त्रिलोकी नाथ आकाशभैरव। आकाशभैरव- अर्थात् सम्पूर्ण आकाशमण्डल के एकमात्र अधिकारी। शिवजी के अनेंको दिव्यावतारों में से अत्यन्त उग्र, क्रोधयुक्त तथा विचित्रावतार भगवान् 'शरभराज' हैं। इनकी विचित्र देह में पशु और पक्षि के विराट अंगों का अनूठा मिश्रण है। अद्भुत एवं विशाल पंखों के कारण इन्हें 'पक्षिराज' भी कहा जाता है। भगवान् शरभेश्वर समस्त देवताओं और प्राणियों को ऊर्जा प्रदान करने वाले स्रोत हैं। इनकी उपासना से प्राप्त फल का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। संक्षेप में कहा जाये तो इनका उपासक प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण सफलता प्राप्त कर परम सौभाग्य को

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अति शीघ्र सिद्ध कर सकता है। इस महासाधना को सम्पन्न करने के पश्चात् मनुष्य को किसी और विद्या या मंत्र को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती है। तंत्रक्षेत्र और समाज में उपासक को आश्चर्यजनक लाभ होते हैं।

शरभावतार के विषय में कई कथाएं तंत्रशास्त्रों में प्रचलित हैं। आकाशभैरवकल्प, शिवपुराण तथा लिंगपुराण आदि शैवग्रन्थों में शिवजी की महिमा बताते हुए लिखा है- कि हिरण्यकशिपु का वध करने के पश्चात् जब भगवान् नृसिंह का क्रोध शान्त न हुआ और वे समस्त सृष्टि का संहार करने हेतु आतुर हो गये तो समस्त देवताओं द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान् नृसिंह के स्वरूप को शान्त करने हेतु स्वयं शिवजी विराट पक्षी के रूप में अवतरित हुए। आपका आधा शरीर मृग का और आधा शरीर मनुष्य का है एवं मुख उल्लू पक्षी का है जिसमें तीन नेत्रों में अग्नि-सूर्य-चन्द्र का वास है। अष्टपादयुक्त, जिसमें शिव की अष्टमूर्तियां विराजित हैं। अपने हाथों में दिव्यास्त्रों को धारण किये हुए हैं, वज्र के समान कठोर नख हैं एवं अत्यन्त उग्र व चंचल जीभ है। इनके

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

एक पंख पर काली और दूसरे पंख पर दुर्गा विराजमान हैं। हृदय और उदर में प्रलयकाल की अग्नि व्याप्त है। कटिप्रदेश के नीचे का भाग हिरण की तरह एवं पूंछ सिंह के समान लम्बी और दोनों विशाल जंघाओं पर व्याधि एवं मृत्यु बैठे हैं। उड़ने की गति वायु के समान प्रचण्ड है। ऐसे महाविराट पक्षिराज ने नृसिंह को अपने पंजों से उठाकर आकाश में उड़ते हुए इतना भीषण चक्कर लगाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कम्पन होने लगा। तत्पश्चात् भगवान् नृसिंह ने अपने क्रोध का त्याग करते हुए दीनमुख होकर परमेश्वर शिव को स्तुति से प्रसन्न किया और अपने स्वरूप का विसर्जन किया तो शिवजी ने उनकी चर्म को प्रिय मानकर उसे बाघाम्बर रूप में धारण किया और उनके मुण्ड को अपनी मुण्डमाला में धारण किया, ऐसी प्राचीन शास्त्र-ग्रन्थों में कथा है।

वैष्णव आदि ग्रन्थों में विष्णुजी की महिमा बताते हुए कहा गया है कि- भक्त प्रह्लाद की स्तुति आदि से भगवान् नृसिंह का क्रोध शान्त हुआ था। प्रत्येक देवता के ग्रन्थ में उनकी प्रशंसा एवं महिमा की उपस्थिति होना स्वाभाविक ही है। अतः साधकजन को

भगवान् शिव एवं विष्णु के देवत्व में भेदभाव न रखते हुए दोनों को एक समान ही समझना चाहिये। त्रिदेवों की रहस्यमयी माया को उनके अतिरिक्त समझने की क्षमता और किसी में नहीं है। एक ओर भगवान् शिव ने हनुमान रूप में विष्णु के अंश श्रीराम की सेवा की है तो दूसरी ओर विष्णु के अंश राम और परशुराम ने शिवजी को अपना आराध्य माना है। इसी प्रकार देवी-देवताओं द्वारा एक दूसरे को सम्मानित कर स्तुति करने की कई कथाएं हमारे पुराणों में वर्णित हैं। शिवपुराण, स्कन्दपुराण आदि कई शास्त्रपुराणों में दोनों देवों ने स्पष्ट रूप से कहा है- कि शिव ही विष्णु है और विष्णु ही शिव है। केवल नाम और स्वरूप का ही अन्तर है। जो शिव उपासक होकर विष्णु की और जो विष्णु उपासक होकर शिव की निन्दा करेगा या हम दोनों में जो भेद-बुद्धि रखेगा उसे महानरक की प्राप्ति होगी। महादेव के शरीर के बायें भाग से विष्णुजी की तथा दायें भाग से ब्रह्माजी की उत्पत्ति मानी गयी है। लिंगपुराण में वीरभद्र शिव देवताओं से कहते हैं कि- 'जैसे जल में जल, दूध में दूध और घृत में घृत डाले जाने पर एक हो जाता है; वैसे ही विष्णु में शिव लीन हैं,

इसमें संदेह नहीं है। ये गर्वयुक्त महाबली नृसिंह जगत् का संहार करने वाले रूप में प्रकट हुए हैं। मेरी भक्ति की सिद्धि चाहने वालों को नृसिंह की पूजा अवश्य करनी चाहिये; उन नृसिंहरूपधारी विष्णु को नमस्कार है।'

श्मशान रुद्र, प्रलय कालाग्नि रुद्र, नीलभैरव, उग्रभैरव, महारुद्र, महाभैरव, आकाश भैरव, आशुगरुड, शरभराज, शरभसालुव तथा पक्षिराज इनके प्रमुख नाम हैं। ये ही सत्ययुग में योगी, त्रेता में यज्ञस्वरूप, द्वापर में कालाग्नि तथा कलियुग में धर्मकेतु नाम से कहे जाते हैं। शरभराज जी की साधना सर्वबाधाओं से मुक्त कर मनुष्य को अभय प्रदान करती है। जब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शत्रु दुःख पहुंचाने लगें, अभिचारिक क्रिया का किसी भी विद्या से निवारण न हो पा रहा हो, दुर्भाग्य मनुष्य के जीवन में डेरा डालकर बैठ गया हो, अकालमृत्यु अथवा किसी गम्भीर रोग से मनुष्य ग्रस्त हों, तो इन सभी व्याधियों के विनाश हेतु मनुष्य को शरभेश्वर की विधिमय उपासना करनी चाहिये। स्वयं देवता भी शरभराज जी के सच्चे साधक का अनिष्ट नहीं कर सकते। यह

तंत्र क्षेत्र की वह सर्वोच्च साधना है जो साधक को पूर्ण सक्षम बनाती है और एक किले की तरह अपने भक्त को सब प्रकार सुरक्षित रखती है। इनके प्रयोग नृसिंह से भी अधिक घातक हैं, क्योंकि उग्रता, भीषणता एवं तीक्ष्णता के रूप में ही इनका प्रादुर्भाव हुआ था इसलिये आत्मरक्षा कवच एवं गुरु का संरक्षण प्राप्त कर ही इनकी साधना में प्रवेश करना चाहिये। इनके प्रयोगों का अधिकारी उच्च कोटि साधक ही हो सकता है। भगवान् शिव, मृत्युंजय या भगवती दुर्गा के कम से कम 5-7 लाख जप करने के पश्चात् ही इनकी साधना में प्रवेश करना चाहिये। बगला, काली, छिन्नमस्ता के मंत्र जब पूर्ण फल प्रदान न करें, तो साथ में इनके मंत्रों का प्रयोग करना चाहिये। पक्षियों के लिये जल-भोजन आदि की व्यवस्था तथा पिंजरे में कैद पक्षियों को मुक्त कराने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है। शरभराज का चित्र या यंत्र उपलब्ध न हो तो शिवजी के समक्ष यह साधना सम्पन्न की जा सकती है। एकान्त गृह में स्थित पूजास्थान, शिवमन्दिर, भैरवमन्दिर, श्मशान एवं बिल्ववृक्ष के मूल में इनकी साधना सम्पन्न कर सकते हैं। प्रारम्भ में अष्टभैरव, एकादशरुद्र और

उनकी शक्तियों की पूजार्चन कर उनसे साधना में निर्विघ्नतापूर्वक सफलता का आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकार सम्पन्न साधना से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

इनकी महिमा के बारें में लिखा है- पक्षिराज का प्रयोग किसी पर किया जाये तो स्वर्ग-पाताल-भूतल पर त्रिदेव भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। सरसों के तेल से बीजमंत्र, मूलमंत्र, रुद्रसूक्त या पक्षिराजस्तोत्र के द्वारा शिवलिंग का अभिषेक किया जाये तो असाध्य रोग व कृत्या दोष समाप्त होते हैं। सरसों के तेल से अभिषेक के पश्चात् शान्ति हेतु पुनः दुग्ध, दही या सुगन्धित द्रव्यों आदि से अभिषेक करना चाहिये।

शरभराज जी की साधनाकाल के अन्तर्गत साधक को स्वप्न में आकाश में तीव्र गति से उड़ते हुए विशाल पक्षी या स्वयं शिवजी के दर्शन हो सकते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण आकाशमण्डल इन्हीं का क्षेत्रफल है। कुछ उच्च साधकों को रात्रिकाल में जाग्रत अवस्था में भी कुछ क्षण के लिये आकाश में इनके दर्शन हुए हैं। साधक की श्रद्धा एवं योग्यतानुसार ही देवता अपने स्वरूप के दर्शन कराते

हैं। प्रारम्भिक अवस्था में साधक को क्रोध या आवेश अधिक रह सकता है इसके लिये नित्य शान्ति कर्म करने का प्रावधान है। इस प्रकार की उग्र साधनाओं में विशेष सतर्कता एवं मार्गदर्शन की परम आवश्यकता होती है। सम्पूर्ण यम नियमों एवं परिस्थितिनुसार साधना में परिवर्तन करने की विधियों को प्रस्तुत करना असम्भव है। अतः उच्चकोटि साधक, जो साधना क्षेत्र का पर्याप्त अनुभव रखता हो ऐसे तंत्राचार्य के संरक्षण में ही इस महासाधना को सम्पन्न करने का प्रयास करना चाहिये।

गुरु-शिष्य आचार संहिताः- मंत्र साधन के लिये गुरु एक अनिवार्य तत्व है। मनुष्य देह मनुष्य देह से ही ज्ञानार्जित कर सकता है, इसलिये परमात्मा मनुष्य रूप में आकर जीव को ज्ञान प्रदान करते हैं। स्वयं हनुमानजी, श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं अन्य अवतारों तथा महापुरुषों ने भी मनुष्य रूप में आध्यात्मिक गुरु को स्वीकार किया था। शास्त्रों में लिखा है कि गुरु बनाने से पूर्व उनका निरीक्षण करना चाहिये, उसमें अमुक-अमुक लक्षण होने चाहियें, परंतु एक शिष्य के लिये किसी गुरु का वास्तविक परीक्षण

करना इतना सरल नहीं होता। फिर भी यदि किसी गुरु से मिलकर परम शान्ति का अनुभव हो, चित्त में प्रसन्नता आ जाये, उनके प्रवचनों से मनुष्य की जिज्ञासा एवं शंकाओं का निवारण हो, बार-बार उनसे मिलने की इच्छा प्रकट हो, विशिष्ट तंत्रज्ञान एवं तेजयुक्त आभामण्डल हो, तो उन महापुरुष से दीक्षा ग्रहण कर लेनी चाहिये। फिर उनकी जाति या उम्र नहीं देखी जाती है। फिर भी गुरु का चयन करने में कोई समस्या उत्पन्न हो, तो जगत्गुरु महादेव के इस मंत्र (ॐ जगत्गुरु शिवाय नमः) की रात्रिकाल में 41 माला कम से कम तीन महीने तक नित्य करें। नित्य श्रद्धापूर्वक गुरु से मिलन की प्रार्थना करें तो गुरुदेव के स्वप्न में दर्शन होते हैं। मंत्र जप के पश्चात् मौनपूर्वक वहीं पूजनस्थल पर ही भूमि पर शयन करना है। आवश्यक यमनियमों का पालन अनिवार्य है।

गुरु और देवता को प्रसन्न करना जितना कठिन है उससे भी अधिक कठिन है इन सम्बन्धों को परस्पर बनाए रखना। वास्तव में कुछ लोग केवल कार्य सिद्धि के लालच में गुरुदेव कह देते हैं,

किन्तु इसको हृदय से नहीं स्वीकारते। यही उनसे साधना में सबसे बड़ा दोष हो जाता है। गुरु भी इस तथ्य को समझते हैं, इसलिये वह भी इतनी शीघ्र अत्यन्त गूढ़ रहस्यों, अनुभवों एवं विधानों को शिष्य के समक्ष प्रकट नहीं करते। वास्तव में गुरु का सम्मान और सेवा भी माता-पिता के समान ही होती है। यदि मातृपितृ भावना से हम गुरु को संतुष्ट कर सकते हैं, तो ही हमें गुरु दीक्षा रूपी अटूट सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये, अन्यथा नहीं। जो मनुष्य निश्चल भाव से स्वयं को अपने गुरु को समर्पित कर देता है, बिना तर्क वितर्क किये उनके द्वारा निर्देशित पूजा पद्धति को मस्तक पर धारण करता है, वहीं देवसिद्धि को प्राप्त कर सकता है, क्योंकि दीक्षा के समय जगत्गुरु महादेव का ही मनुष्यरूपी गुरु में अधिष्ठान माना जाता है। ऐसे शिष्य चाहे मंदबुद्धि भी हों तब भी उनकी पूजा शीघ्र स्वीकार्य होती है। जो मनुष्य अपनी सांसारिक कामना, बुद्धि, विचार और अहं भाव आदि विकारों के साथ गुरु से सम्बन्ध बनाता है, तो कुछ समय पश्चात् वह गुरु का परित्याग कर ही देता है, क्योंकि गुरु और देवता ब्रह्माजी की लेखनी को बार-बार चुनौती नहीं दे सकते। यह ज्ञान परिपक्व

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

मनुष्य के पास होना चाहिये। इस दुर्व्यवहार से भले ही गुरु उसे कोई दण्ड न दें, लेकिन आचार-संहिता का उल्लंघन कर वह पाप का भागी तो बन ही जाता है। एक सच्चा साधक जिस पर ईश्वरीय कृपा हो, उन गुरु की उपेक्षा करने वाले मनुष्य को उसका भोग देर-सवेर किसी न किसी रूप में भोगना ही पड़ता है, ऐसे कई प्रत्यक्ष अनुभव हैं मेरे पास। जब तक हमारे अनुसार अति शीघ्र हमारा कार्य सिद्ध होता रहे तो गुरु और मंत्र पर श्रद्धा बनी रहती है, परंतु आगे जाकर कुछ कार्य न हो तो दोनों का परित्याग करना, यह मनुष्य का बहुत बड़ा दोष है। मनुष्य का कई कामनाओं से लदा हुआ साधनारथ अधिक दूरी तक नहीं जा सकता। वह या तो रुक जायेगा या रास्ता भटक जायेगा। मनुष्य को अपने इष्टदेव पर धैर्य रखते हुए उन्हें पर्याप्त समय देना चाहिये जिससे वह मनुष्य के अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न कर सके और हमारी हर इच्छा देवता मंत्र के द्वारा पूरी कर देंगे, इस भावना का भी त्याग करें। लोटे को चाहे समुद्र में एक मील नीचे डुबो दो, पर उसमें जल तो उसके आकार जितना ही समायेगा।

शिष्य अपनी सेवा और प्रेम से गुरु को विवश कर सकता है कि गुरु वह गूढ़ रहस्य और विद्याएं उस शिष्य के समक्ष प्रकट कर दे जिसे गुरु ने अपने पुत्र के समक्ष भी प्रकट न की हो, क्योंकि कुछ आलौकिक रहस्य और विधान गुरु शिष्य की पात्रता, भक्ति, परीक्षा, सेवा और एक निश्चित समय के उपरान्त् ही प्रदान करता है। देवता की भांति गुरु की कृपा प्राप्त करने के लिये भी श्रद्धा, सेवा, निष्ठा एवं धैर्य की आवश्यकता होती है। हमारे पुराणों में ऐसे कई शिष्यों के उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने अपनी सेवा भक्ति से गुरु के कठोर स्वभाव को भी निर्मल बनाकर उनसे सिद्धता प्राप्त कर ली थी। जो भाव देवता व मंत्र में हो वही भाव अपने सद्गुरु में भी होना चाहिये। मात्र वाणी में ही नहीं, हृदयमन्दिर में भी गुरुश्रद्धा होनी चाहिये। अपनी योग्यता एवं गुरु की आवश्यकतानुसार उन्हें संतुष्ट करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिये। गुरु प्रसन्न न हो या हमसे रुष्ट हो तो हमें गुरु को प्रसन्न करने का यत्न करना चाहिये न कि अन्य विकल्प की

ओर मुख करना चाहिये। गुरु धारण करने से पूर्व ही हमें अपनी सारी शंकाओं और जिज्ञासाओं का भली प्रकार से समाधान कर लेना चाहिये, किन्तु गुरु धारण करने के बाद उनकी आज्ञा को ईश्वर का वचन मानें। हो सकता है कि प्रथम या द्वितीय बार में दुर्भाग्यवश आपको सुयोग्य गुरु ना मिले, परन्तु जिसमें ईश्वर उपासना की तीव्र उत्कण्ठा हो और शिष्य एवं साधक के सर्वगुण विद्यमान हो ऐसे साधु के लिये ईश्वर स्वयं श्रेष्ठ गुरु की व्यवस्था कर देते हैं।

शास्त्रों में कुछ नियम एवं संहिताएं गुरु के लिये भी निर्देशित हैं। जिसका पालन न करने से गुरु को भी आध्यात्मिक हानि होती है और मरणोपरान्त् नरक की प्राप्ति होती है। गुरु की महिमा गोविन्द से भी अधिक बतायी गयी है, पर वह महिमा भी उस गुरु की है, जो शिष्य का उद्धार करने में सक्षम हो। श्रीमद्भागवत में लिखा है– 'जो समीप आयी हुई मृत्यु से नहीं छुड़ाता, वह गुरु गुरु नहीं है, स्वजन स्वजन नहीं है, पिता पिता नहीं है, माता माता नहीं है, इष्टदेव इष्टदेव नहीं है और पति पति नहीं है।' अर्थात् जब तक अपने शिष्य का कल्याण करने की क्षमता न आ जाये, तब तक वह गुरु पदवी को न संभाले।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

कारण कि गुरुरूपी वैद्य का चोला तो पहन लें, लेकिन शिष्यरूपी रोगी का उपचार न कर पाये तो दोष तो गुरु को ही लगेगा, क्योंकि वह रोगी दूसरे स्थान पर जाकर अपना उपचार करवा लेता। महाभारत में लिखा है- 'यदि गुरु भी घमण्ड में आकर कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान खो बैठे और कुमार्ग पर चलने लगे तो उसका परित्याग करने का विधान है।' गुरुगीता में लिखा है- 'ज्ञानरहित, मिथ्यावादी और भ्रम उत्पन्न करने वाले गुरु का त्याग कर देना चाहिये; क्योंकि जो खुद शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता, वह दूसरों को शान्ति कैसे देगा?' जिस गुरु के ऊपर दैवीय कृपा होगी, उसके मुख से प्राप्त मंत्र में भी शक्ति होगी और उन गुरु के मुख से लिये मंत्र को जप करने में बड़ा आनन्द आयेगा, मन भी लगेगा, घंटों पूजा करने में भी कुछ समस्या नहीं होगी, इसके विपरित सब उल्टा होगा। एक जितेन्द्रिय, विशिष्ट उपासक गुरु का आशीर्वाद हाथी दांत की तरह होता है, जो मनुष्य के अज्ञानरूपी द्वार को तोड़ देता है। गुरु शिष्य रूपी संवाद को यहीं समाप्त कर भगवान् शरभेश्वर की पूजा पद्धति की ओर पुनः प्रस्थान करते हैं। गुरु शिष्य विषय पर विस्तृत चर्चा फिर कभी करेंगे।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

साधनारम्भः- साधक पवित्र होकर पूजास्थल में प्रवेश करे। प्राणायाम कर गणपति, गुरु, नवग्रहों, पंचदेवताओं, एकादशरुद्र और उनकी शक्तियों का अर्चन कर यंत्र अथवा शिवलिंग में भगवान् शरभेश्वर का आवाह्नादि कर गन्धाक्षत एवं पुष्प से प्रत्येक मंत्रवर्ण और मातृका पूजा सम्पन्न करे। जैसे-

।।मंत्रवर्ण पूजा।।

खं ॐ रूपाय नमः। खं खें रूपाय नमः। खं खां रूपाय नमः। खं खं रूपाय नमः। खं फट् रूपाय नमः। खं प्रा रूपाय नमः। खं ण रूपाय नमः। खं ग्र रूपाय नमः। खं हा रूपाय नमः। खं सि रूपाय नमः। खं प्रा रूपाय नमः। खं ण रूपाय नमः। खं ग्र रूपाय नमः। खं हा रूपाय नमः। खं सि रूपाय नमः। खं हुं रूपाय नमः। खं फट् रूपाय नमः। खं स रूपाय नमः। खं र्व रूपाय नमः। खं श रूपाय नमः। खं त्रु रूपाय नमः। खं सं रूपाय नमः। खं हा रूपाय नमः। खं र रूपाय नमः। खं णा रूपाय नमः। खं य रूपाय नमः। खं श रूपाय नमः। खं र रूपाय नमः। खं भ रूपाय नमः। खं शा रूपाय नमः। खं लु रूपाय

नमः। खं वा रूपाय नमः। खं य रूपाय नमः। खं प रूपाय नमः। खं क्षि रूपाय नमः। खं रा रूपाय नमः। खं जा रूपाय नमः। खं य रूपाय नमः। खं हुं रूपाय नमः। खं फट् रूपाय नमः। खं स्वा रूपाय नमः। खं हा रूपाय नमः।

।।मातृका पूजा।।

'अ' से लेकर 'क्ष' तक पचास अक्षरों को 'मातृका' कहते हैं। 'मातृका' का अर्थ है माता अथवा जननी। समस्त मंत्र वर्णात्मक हैं और मंत्र परम शक्तिस्वरूप हैं। इन्हीं मंत्रात्मक वर्णों से समस्त विश्व का सृजन और समस्त मंत्रों का निर्माण हुआ है। मंत्रात्मक अक्षरों को ब्रह्मशब्द कहा जाता है। इसलिये इनके संयोग से शरभेश्वर की साधना करने से मंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।

खं अं रूपाय नमः। खं आं रूपाय नमः। खं इं रूपाय नमः। खं ईं रूपाय नमः। खं उं रूपाय नमः। खं ऊं रूपाय नमः। खं ऋं रूपाय नमः। खं ॠं रूपाय नमः। खं ऌं रूपाय नमः। खं ॡं रूपाय नमः। खं एं रूपाय नमः। खं ऐं रूपाय नमः। खं ओं

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

रूपाय नमः। खं औं रूपाय नमः। खं अं रूपाय नमः। खं अः रूपाय नमः। खं कं रूपाय नमः। खं खं रूपाय नमः। खं गं रूपाय नमः। खं घं रूपाय नमः। खं ङं रूपाय नमः। खं चं रूपाय नमः। खं छं रूपाय नमः। खं जं रूपाय नमः। खं झं रूपाय नमः। खं ञं रूपाय नमः। खं टं रूपाय नमः। खं ठं रूपाय नमः। खं डं रूपाय नमः। खं ढं रूपाय नमः। खं णं रूपाय नमः। खं तं रूपाय नमः। खं थं रूपाय नमः। खं दं रूपाय नमः। खं रूपाय धं नमः। खं नं रूपाय नमः। खं पं रूपाय नमः। खं फं रूपाय नमः। खं बं रूपाय नमः। खं भं रूपाय नमः। खं मं रूपाय नमः। खं यं रूपाय नमः। खं रं रूपाय नमः। खं लं रूपाय नमः। खं वं रूपाय नमः। खं शं रूपाय नमः। खं षं रूपाय नमः। खं सं रूपाय नमः। खं हं रूपाय नमः। खं लं रूपाय नमः। खं क्षं रूपाय नमः। इसके पश्चात् स्थिर मन से शरभेश्वर के मंत्रों का जागरण करें। शरभेश्वर साधना की प्रथम सीढ़ी एकाक्षर मंत्र है। सर्वप्रथम इसी की दीक्षा ग्रहण करें। इसके पश्चात् क्रम से आगे बढ़ते जायें।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

।।एकाक्षर मंत्र।।

'खं।'

।।षड्क्षर मंत्र।।

विनियोगः- अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, पक्षिरूपो शालुवो देवता, ॐ बीजं, हुं शक्तिः, क्रौं कीलकं, सर्वार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

मंत्र के द्वारा अथवा बीजमंत्र से षडंगन्यास करें:-

ध्यानम्:-

उग्राकारोग्रदृष्टि प्रकटितभयदं दंभोलिघोषं

ज्वालामालापटाग्रे ज्वलदनल समं हारकेयूरभूषम्।

हालाहल कलंकरन्ध्रसहितं हंसात्मकं केशरम्

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वंदेऽहं हरि पार्वती पति विरंचयात्मं चिरं शालुवम्।।

मंत्रः- 'ॐ श्रीं आं क्रौं हुं अं।'

।।अष्टाक्षरमंत्र।।

'ॐ आं क्षौं ह्रीं हुं हुं हुं फट्।'

।।शरभराजमूलमंत्र।।

भगवान् शिव का यह महामंत्र भोगमोक्ष प्रदान करने वाला है। जिसके जप से मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर परमसौभाग्य को प्राप्त करता है। यह दिव्य मंत्र राज्यभय, चोरभय, मृत्युभय का विनाशक व सर्वजयप्रदाता है। विधिमय मंत्रसाधना से सर्वापदाओं से मुक्त होकर साधक शिवधाम को प्राप्त करता है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

विनियोगः- अस्य श्रीशरभेश्वरमंत्रस्य कालाग्नि रुद्रः ऋषिः, जगती छन्दः, भगवान् शरभेश्वरोदेवता, खंकार बीजम्, स्वाहा शक्तिः अभीष्ट प्रयोग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास व हृदयादिन्यासः-

ॐ खें खां खं फट् ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

प्राणग्रहसि-प्राणग्रहसि हुं फट् ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

सर्वशत्रुसंहारणाय ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

शरभशालुवाय ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

पक्षिराजाय ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

हुं फट् स्वाहा ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्ः-

चंद्रादित्याग्निदृष्टिः कुलिशवरनखश्चंचुरत्युग्रजिह्वः

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगौ भैरवो वाडवाग्निः।

ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यु शरभवरखगश्चंडवातातिवेगः

संहर्ता सर्वशत्रून्विजयतु शरभः सालुवः पक्षिराजः।।

विमलनभमहोद्यत्कृत्तिवासो वसानम्

द्रुहिण सुरमुनीन्द्रैः स्तूयमानं गिरीशम्।

स्फटिकमणि जपास्रक् पुस्तकोद्यत्कराब्जम्

शरभमहमुपासे सालुवेशं खगेशम्।।

मंत्रः- 'ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहसि प्राण-ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।'

यह महामंत्र 42 अक्षरों का है। प्रत्येक मंत्रवर्ण पर एक हजार जप करने से 42 हजार मंत्र का जप होता है। दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। अधिक लाभ हेतु विधिवत्

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

एक लाख जप करें। इस प्रकार किये गये मंत्र जप से शत्रुओं का समूल नाश होता है एवं सर्वबाधाओं से मुक्ति मिलती है। मूल मंत्र के साथ यथासम्भव गायत्री का जप अवश्य करना चाहिये।

पक्षिराज गायत्रीः- 'ॐ पक्षिराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।'

लक्ष्मीकारक मंत्रः- 'ॐ श्रीं ह्लूं स्वाहा शरभ शालुवाय स्वाहा ह्लूं श्रीं हूं ह्रीं ॐ।'

बालासुन्दरी सम्पुटित मंत्रः- 'ॐ ऐं क्लीं सौंः हुं हुं हुं शालुवाय हुं हुं हुं सौंः क्लीं ऐं स्वाहा।'

।।शत्रुनाशक शरभराज मंत्र।।

वास्तविक शत्रुदल से मुक्ति या संहार हेतु ही इन मंत्रों का प्रयोग करना चाहिये। वह भी तब जब मनुष्य के द्वारा किये गये

सारे प्रयास विफल होने लगें। मंत्रों द्वारा देवताओं को छोटे-मोटे कार्यों के लिये कष्ट देने से मनुष्य दोष का भागी बनता है।

1- 'ॐ ह्सौं खें खां खं घ्रां घ्रूं हां हूं हुं फट् सर्वशत्रु संहारणाय शरभ शाल्लवाय कालाग्निरुद्राय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।'

2- 'ॐ नमो भगवते शरभ शालवाय पक्षिराजाय मम शत्रुन्नाशय नाशय घः घः हुं फट् स्वाहा।

3- 'ॐ नमो भगवते प्रलय कालाग्नि रुद्राय दक्षाध्वर ध्वंसकाय महाशरभाय मम शत्रुन् छेदनं कुरु-कुरु स्वाहा।'

।।शरभराज-चित्रमालामंत्र।।

विनियोगः- अस्य श्रीआकाशभैरवचित्रमालामंत्रस्य श्रीआनन्दभैरव ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीआकाशभैरव देवता। ह्रीं बीजं। हुं शक्तिः। सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ऋष्यादिन्यासः- श्रीआनन्दभैरव ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। आकाश भैरव देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। हुं शक्तयै नमः पादयोः। सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास व हृदयादिन्यासः-

ह्रां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ह्रीं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ह्रूं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ह्रैं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

ह्रौं ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ह्रः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्ः-

सहस्रपाणि पदवक्त्रं, सहस्र-त्रयलोचनम्।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

सर्वाभीष्टप्रदं देवं, स्मरेद् आकाशभैरवम्।।

मंत्रः-

"ॐ नमो भगवते आकाशभैरवाय निखिललोकप्रियाय प्रणतजन परिताप विमोचनाय सकलभूतनिवारणाय सर्वाभीष्टप्रदाय नित्याय सच्चिदानंदविग्रहाय सहस्रबाहवे सहस्रमुखाय सहस्रत्रिलोचनाय सहास्रचरणाय करालाय अखिल रिपुसंहार कारणाय अनेककोटि ब्रह्मकपालमालाअलंकृताय नररुधिरमांसभक्षणाय महाबलपराक्रमाय महादन्तराय विषमोचनाय पर मंत्रयंत्रतंत्र विद्या विच्छेदनाय प्रसन्नवदनाम्बुजाय एह्येहि आगच्छागच्छ ममाभीष्टं आकर्षयाकर्षय आवेशयावेशय मोहय 2 भ्रामय 2 द्रावय 2 तापय 2 साधय 2 बंधय 2 भाषय 2 क्षोभय 2 भूतप्रेतादि पिशाचान् मर्दय 2 कुर्दम 2 पाटय 2 मोटय 2 गुंफय 2 कंपय 2 ताडय 2 त्रोटय 2 भेदय 2 छेदय 2 चंडवातातिवेगाय संतत गंभीर विजृंभणाय संकर्षय 2 संक्रामय 2 प्रवेशय 2 स्तोभय 2 स्तंभय 2 तोदय 2 खेदय 2 तर्जय 2 गर्जय 2 नादय 2 रोदय 2 घातय 2 वेतय 2 सकल

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

रिपुजनाछिन्धि 2 भिन्दय 2 अंधय 2 रूंधय 2 नर्दय 2 बंधय 2 श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याणकारणाय श्मशानानंद महाभोगप्रियाय देवदत्तं (अमुकं) आनय 2 दूनय 2 कलेय 2 मेलय 2 प्रपन्न वत्सलाय प्रतिवदन दहनामृत किरणनयनाय सहस्रकोटि वेताल परिवृताय मम रिपूनुच्चाट्योच्चाट्य नेपय 2 तापय 2 सेचय 2 मोचय 2 लोटय 2 स्फोटय 2 ग्रहण 2 अनंत वासुकि तक्षक कर्कोटक पदम महापद्म शंख गुलिक महानाग भूषणाय स्थावर जंगमानां विषं नाशय 2 प्राशय 2 भस्मीकुरु 2 भक्तजनवल्लभाय सर्गस्थितिसंहारकारणाय कथय 2 सर्वशत्रून् उद्रेकय 2 विद्वेषय 2 उत्सादय 2 बाधय 2 साधय 2 दह 2 पच 2 शोषय 2 पोषय 2 दूरय 2 मारय 2 भक्षय 2 शिक्षय 2 समस्तभूतं शिक्षय 2 श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत तांडवाय आपदुद्धारणाय साधुजनान् तोषय 2 भूषय 2 पालय 2 शीलय 2 कामक्रोधलोभमोहमद मात्सर्यं शमय 2 दमय 2 त्रासय 2 शासय 2 क्षिति जल दहन मारुत गगन तरणि सोमात्मशरीराय शम-दमोपरति तितिक्षा समाधानं श्रद्धां दापय 2

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

प्रापय 2 विघ्न विच्छेदनं कुरु 2 रक्ष क्ष्म्रचैं क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।"

भगवान् आकाश भैरव का यह गोपनीय महामंत्र है। जिसके स्मरण व जप से मनुष्य के सर्वदुःखो व व्याधियों का भंजन होता है। इस मंत्र का प्रभाव अत्यन्त उग्र है, इसलिये किसी कार्य की सिद्धि हेतु प्रारम्भ में नित्य रात्रि 7 या 9 पाठ ही करें।

।।सर्व रोगनिवारण शरभ शाबर मंत्र।।

"ॐ नमो भगवते शरभ सालुवाय सकल रोग संहारिणे चटकोच्छेनकराय पेशाचिनीदारणाय घे घे शरभाय ग्रसि शरभ सालुवा ग्लौं शरभाय निरोगामाडु मुईल्ल दिद्दरे महामायी आणे, महेश्वरनाणे, प्रलयकालरुद्रनाणे, कालभैरवनाणे, निरोगामाडु दिद्दरे निनग कैलासपति पाणे। ॐ गुरु प्रसादम्।"

शाबर परम्परानुसार गुरु आज्ञा से इस मंत्र को सिद्ध करने से गम्भीर रोगों की समाप्ति होती है। मंत्र के द्वारा अभिमंत्रित

जल पीने से शरीर में दिव्य ऊर्जा का वास होता है और ग्रहपीड़ा से शान्ति मिलती है। परिस्थितिनुसार जप करें।

।।श्रीनृसिंह कृतं श्रीशरभ स्तुति।।

श्रीनृसिंह उवाचः-

ॐ नमो रुद्राय शर्वाय महाग्रासाय विष्णवे।

नमः उग्राय भीमाय नमः क्रोधाय मन्यवे।।

नमो भवाय शर्वाय शंकराय शिवाय ते।

कालकालाय कालाय महाकालाय मृत्यवे।।

वीराय वीरभद्राय क्षयद्वीराय शूलिने।

महादेवाय महते पशूनां पतये नमः।।

एकाय नीलकण्ठाय श्रीकण्ठाय पिनाकिने।

नमोऽनन्ताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्युमन्यवे।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

पराय परमेशाय परात्परतराय ते।

परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये।।

नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भानवे।

कैवर्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते।।

भैरवाय शरण्याय महाभैरवरूपिणे।

नमो नृसिंहसंहर्त्रे कामकालपुरारये।।

महापाशौघसंहर्त्रे विष्णुमायान्तकारिणे।

त्र्यम्बकायै त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे।।

मृत्युंजयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये।

मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे।।

महाघ्राणाय जिह्वाय प्राणापानप्रवर्तिने।

त्रिगुणाय त्रिशूलाय गुणातीताय योगिने।।

संसाराय प्रवाहाय महायंत्रप्रवर्तिने।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

नमश्चन्द्राग्निसूर्याय मुक्तिवैचित्र्यहेतवे।।

वरदायावताराय सर्वकारणहेतवे।

कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।।

अमोघायाग्निनेत्राय लकुलीशाय शम्भवे।

भिषक्तमाय मुण्डाय दण्डिने योगरूपिणे।।

मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः।

अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिरधन्विने।।

स्थाणवे कृत्तिवासाय नमः पंचार्थहेतवे।

वरदायैकपादाय नमश्चन्द्रार्धमौलिने।।

नमस्तेऽध्वरराजाय वयसां पतये नमः।

योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने।।

सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वेश्वराय ते।

एकद्वित्रिचतुः पंचकृत्वस्तेऽस्तु नमो नमः।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

दशकृत्वस्तु साहस्रकृत्वस्ते च नमो नमः।

नमोऽपरिमितं कृत्वानन्तकृत्वो नमो नमः।।

नमो नमो नमो भूयः पुनर्भूयो नमो नमः।

इस प्रकार नृसिंह भगवान् ने एक सौ आठ नामों से शरभरूप ईश्वर की स्तुति कर उनसे पुनः प्रार्थना की- हे परमेश्वर! जब-जब अति अहंकार से दूषित अज्ञान मुझमें उत्पन्न हो, तब-तब आप उसे दूर करें।

साधकजन भी इस तथ्य को भली भांति समझें। मनुष्य को साधना या किसी भी विद्या को लेकर अंहकार के एक कण का भी स्वयं में प्रवेश नहीं होने देना चाहिये। अहंकार का बीज उत्पन्न होते ही मनुष्य के गुणों का पतन होना आरम्भ हो जाता है, चाहे वह स्वयं देवता के समान ही क्यों न हो। आपमें जो भी ज्ञान या कला है वह ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त हुई है, सदा इसी धारणा से जीवन निर्वाह करें।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

।।शरभराज-हृदय-स्तोत्रम्।।

समुद्र मन्थन से पूर्व नारायण शरभहृदय का प्रतिदिन प्रातःकाल तीस बार पाठ करते थे। इस प्रकार तीन महीनों तक पाठ करने से भगवान् शरभसालुव प्रकट हुए। नारायण ने भूमि पर लेटकर उन्हें दण्डवत प्रणाम किया। तब महातेजस्वी शालुव ने उन्हें उठाकर उनके माथे को सूंघा और संतुष्ट होकर शालुव ने नारायण से कहा कि तुम्हारा कार्य निर्विघ्न पूरा होगा। यह कहकर उन्होंने नारायण को संसार के रक्षण का प्रभार दिया। तब शालुवेश ने कहा कि हे विष्णु! इस हृदय स्तोत्र का पाठ सभी पापों व शत्रुओं का विनाशक व पुण्यफल प्रदाता है। यह पाठ सर्व सौभाग्यदायक तथा सभी कल्याणों की वृद्धि करने वाला है।

विनियोगः- अस्य श्री शरभहृदयस्तोत्रमंत्रस्य कालाग्नि रुद्रः ऋषिः, जगती छन्दः, श्रीशरभराजदेवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, नमः कीलकम् इष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

मूलमंत्र से षडंगन्यास करें:-

स्तोत्रम्:-

प्रथमं पक्षिराजं च द्वितीयं शरभं तथा।

तृतीयं सालुवं प्रोक्तं चतुर्थं लोकनायकम्।।

पंचमं रेणुकानाथं षष्ठं कालाग्निरुद्रकम्।

सप्तमं नारसिंहारिमष्टमं विश्वमोहनम्।।

श्रीं ह्रीं क्लीं नवमं चैव हुं हुं हुं दशमं तथा।

क्लीं श्रीं क्लीं एकादशं च द्वादशं सर्वमंत्रवित्।।

त्रयोदशं तु यंत्रेशं चतुर्दशं महाबलम्।

पंचदशं पापनाशं षोडशं च करालकम्।।

सप्तदशं महारौद्रं भीममष्टादशं तथा।

एकोनविंशं साम्बं च विंशकं शंकरं तथा।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

विंशोत्तरेकं सर्वेशं द्वाविंशं पार्वतीपतिः।

हुं हुं हुं च त्रयोविंशं चतुर्विंशमनन्तकम्।।

पंचाविंशं वृषारुढं षड्विंशं विश्वलोचनम्।

त्रिलोचनं सप्तविंशमष्टाविंशं खगेन्द्रकम्।।

पं पं पं नवविंशं च त्रिंशद् भुजंगभूषणम्।

लं लं लमेक त्रिंशं च द्वात्रिंशं पंचवक्त्रकम्।।

त्रयस्त्रिंशं च नन्दं च चतुस्त्रिंशंमतः परम्।

भं भं भं भं पंचत्रिंशं षट्त्रिंशं शत्रुनाशनम्।।

सप्तत्रिंशं स्वयंभूंच विश्वेशमष्ट त्रिंशकम्।

शूलपाणिं नवत्रिंशं चत्वारिंशत् कलाधरम्।।

एक चत्वारिंशत् सं सं सं द्विचत्वारिंश हासकम्।

एतं यशस्यमायुष्यं मंत्रं सर्वार्थदायकम्।।

अनेकरत्न लम्वानी जटामुकुट धारिणम्।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अनेकरत्न संयुक्तं सुवर्णांचित मौलिनम्।।

तक्षकादि महानाग कुण्डलद्वय शोभितम्।

कालीं लिखित दुर्गां च पक्षद्वय विराजितम्।।

दशायुधधरं दीप्तं दशबाहुं त्रिलोचनम्।

त्रिपंचनयनं पंचवक्त्रतुण्डधरं प्रभुम्।।

नीलकण्ठामराभोग सर्वहारोपशोभितम्।।

विशालाक्षं च विश्वेशं विश्वमोहनमव्ययम्।

त्रिपुरारिं त्रिशूलादिधारिणं मृगधारिणम्।।

करालभृकुटिं भीमं शंखतुल्य कपोलकम्।

व्याघ्रचर्माम्बरधरं वाडवाग्नि स्थितोदरम्।

मृत्युव्याधि स्थितोरूं च वज्रजानु प्रदेशकम्।।

पादपंकजयुग्मं च तीक्ष्णवज्र नखाग्रकम्।

रन्नुपुरमंजीरझणत्किं किणि कूजितम्।।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वज्रतुण्डमहादीप्तं कालकालं कृपानिधिम्।

एवं ध्यात्वा च हृदयं त्रिंशदावृत्तिकं क्रमात्।।

नित्यं जपत्वा सालुवेशं हृदयं सर्वकामदम्।

सर्वपुण्यफल श्रेष्ठं सर्वशत्रुविनाशनम्।।

सर्वरोगहरं दिव्यं भजतां पापनाशनम्।।

इहैव सकलान्भोगानंते शिवपदं व्रजेत्।

इत्युक्त्वान्ते तदा देवः शरभः पक्षिराजसौ।।

ततो नारायणो ध्यात्वा दृष्टवा रूपं च विस्मितः।

एतत्ते सुभ्रु कथितं हृदयं शरभस्य च।

पठतां शृण्वतां चैव सर्वमंत्रादिसिद्धिम्।।

गुरु आज्ञा प्राप्त कर, इस दिव्य स्तोत्र का प्रतिदिन तीस बार पाठ करने से मनुष्य के सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं, सभी रोगों का नाश होता है, शत्रुओं का संहार होता है, सभी मंत्र सिद्ध होते हैं एवं सभी पुण्यफलों की प्राप्ति होती है। संसार के

सभी भोगों को भोगकर अन्त में मनुष्य शिवलोक में स्थान प्राप्त करता है।

।।शरभराज-सहस्रनाम-स्तोत्रम्।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशरभसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य कालाग्नि रुद्रो वामदेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीशरभसालुवदेवता। हस्त्रां बीजं। स्वाहा शक्तिः। फट् कीलकं। श्रीशरभ सालुव प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यासः-

ॐ हस्त्रां ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ॐ हस्त्रीं ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ॐ हस्त्रूं ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ॐ हस्त्रैं ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ हस्त्रौं ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ हस्त्रः ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्ः-

क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापः क्व विश्वंभरः
क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेन्दुः क्व देवासुराः।
कल्पांते शरभेश्वरः प्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरः
क्रीडा-नाटक-नायको विजयते देवो महासालुवः।।

श्रीभैरव उवाचः-

श्रीनाथो रेणुकानाथो जगन्नाथो जगाश्रयः।
श्रीगुरुर्गुरुगम्यश्च गुरुरूपः कृपानिधिः।1।
हिरण्यबाहुः सेनानी दिक्पतिस्तरुराट्टरः।
हरिकेशः पशुपतिर्महांसः पिंजरो मृडः।2।
गणेशो गणनाथश्च गणपूज्यो गणाश्रयः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

विव्याधिर्बम्लशः श्रेष्ठः परमात्मा सनातनः।3।

पीठेशः पीठरूपश्च पीठपूज्यः सुखावहः।

सर्वाधिको जगत्कर्ता पुष्टेशो नंदिकेश्वरः।4।

भैरवो भैरवश्रेष्ठो भैरवायुधधारकः।

आततायी महारुद्रः संसारार्क-सुरेश्वरः।5।

सिद्धःसिद्धिप्रदः साध्यः सिद्धमंडलपूजितः।

उपवीती महानात्मा क्षेत्रेशो वननायकः।6।

बहुरूपो बहुस्वामी बहुपालनकारणः।

रोहितः स्थपतिः सूतो वाणिजो मंत्रिरुन्नतः।7।

पदरूपः पदप्राप्तः पदेशः पदनायकः।

कक्षेशोऽहुः भूतदेवो भुवं तिर्वारिवस्कृतः।8।

दूतिक्रमो दूतिनाथः शांभवः शंकरः प्रभुः।

उच्चैर्घोषो घोषरूपः पत्तीशः पापमोचकः।9।

वीरो वीर्यप्रदः शूरो वीरेशो वीरदायकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ओषधीशः पंचवक्त्रः कृत्स्नवीतो भयानकः।10।

वीरनाथो वीररूपो वीर–आयुधधारकः।

सहमानः स्वर्णरतो निर्व्याधि निरूपप्लवः।11।

चतुराश्रमनिष्ठश्च चतुर्मूर्तिश्चतुर्भुजः।

आव्याधिनीशः ककुभो निषंगी स्तेनरक्षकः।12।

षष्टीशो घटिकारूपः फलसंकेतवर्धकः।

मंत्रात्मा तस्कराध्यक्षो वंचकः परिवंचकः।13।

नवनाथो नवांकस्थो नवश्चक्रेश्वरो विभुः।

अरण्येशः परिचरो निचेयुस्तयुरक्षकः।14।

वीरावलीप्रियः शांतो युद्धविक्रमदर्शकः।

प्रकृतेशो गिरिचरः कुलिंचेशो गुहेष्टदः।15।

पंचपंचकतत्वस्थस्तत्वातीत स्वरूपकः।

भवः शर्वो नीलकंठः कपर्दी त्रिपुरान्तकः।16।

श्रीमंत्र श्रीकलानाथः श्रेयदः श्रेयवारिधिः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

मुक्तकेशो गिरिशयः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।17।

मालाधरो मनःश्रेष्ठो मुनिमानसहंसगः।

शिपिविष्टश्चंद्रमौली हंसो मीढुष्टमोऽनघः ।18।

मंत्रराजो मंत्ररूपो मंत्रपुण्यफलप्रदः।

उर्व्यः सूर्म्योद्ग्रीयशीभ्यः प्रथमपावकाकृतिः ।19।

गुरुमंडलरूपस्थो गुरुमंडलकारणः।

अचरस्तारकस्तारो वस्वन्योऽनंतविग्रहः ।20।

तिथिमंडलरूपश्च वृद्धिक्षयविवर्जितः।

द्वीप्यः स्रोतस्य ईशानो धुर्यो गव्ययतोमयः ।21।

प्रथमः प्रथमाकारो द्वितीयः शक्तिसंयुतः।

गुणत्रय-तृतीयोऽसौ युगरूपश्चतुर्थकः ।22।

पूर्वजो वरजो ज्येष्ठः कनिष्ठो विश्वलोचनः।

पंचभूतात्म साक्षीशो ऋतुःषड्गुणभावनः ।23।

अप्रगल्भो मध्यमोर्म्यो-जघन्योऽजघन्यः शुभः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

सप्तधातुस्वरूपश्च अष्टमः सिद्धिसिद्धिदः।24।

प्रतिसर्पोऽनन्तरूपो सोभ्यो याम्य सुराश्रयः।

नवनाथ-नवम्यस्थो दिशदिग्रूपधारकः।25।

रुद्र एकादशाकारो द्वादशादित्यरूपकः।

वन्यो वसान्यः पूतात्मा श्रवः कक्षः प्रतिश्रवाः।26।

व्यंजनो व्यंजनातीतो विसर्गः स्वरभूषणः।

आशुषेणो महासेनो महावीरो महारथः।27।

अनन्तो अव्ययो आद्यो आदिशक्ति-वरप्रदः।

श्रुतसेन-श्रुतसाक्षी कवची वशकृद्वशः।28।

आनन्दश्चाद्य-संस्थान आद्याकारण-लक्षणः।

आहनन्योऽनन्यनाथो दुंदुम्यो दुष्टनाशनः।29।

कर्ता कारयिता कार्यः कार्यकारणभावगः।

धृष्ण प्रमृश ईड्यात्मा वदान्यो वेदसम्मतः।30।

कलनाथः कलालीतः काव्यनाटकबोधकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

तीक्ष्णेषुपाणिः प्रहितः स्वायुधः शस्त्रविक्रमः।31।

कालहन्ता कालसाध्यः कालचक्र-प्रवर्तकः।

सुधन्वा सुप्रसन्नात्मा प्रविवित्तः सदागतिः।32।

कालाग्निरुद्र-सदींप्तः कालांतकभंयकरः।

खंगीशः खंगनाथश्च खंगशक्ति परायणः।33।

गर्वघ्नः शत्रुसंहर्ता गमागमविवर्जितः।

यज्ञकर्मफलाध्यक्षो यज्ञमूर्तिरनातुरः।34।

घनश्यामो घनानंदी घनाधारप्रवर्तकः।

घनकर्ता घनतात्रा घनबीजसमुत्थितः।35।

लोप्यो लुप्यः पर्णसद्यः पण्यः पूर्ण पुरातनः।

डकारसंधि-साध्यानो वेदवर्णनसांगकः।36।

भूतो भूतपतिर्भूपो भूधरो भूधरायुधः।

छन्दःसारः छंदकर्ता छंद-अन्वयधारकः।37।

भूतसंगो भूतमूर्तिर्भूतिहा भूतिभूषणः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

छत्रसिंहासनाधीशो भक्तछत्रसमृद्धिमान् ।38।

मदनो मादको माद्यो मधुहा मधुरप्रियः।

जपो जपप्रियो जप्यो जपसिद्धिप्रदायकः ।39।

जपसंख्यो जपाकारः सर्वमंत्रजपप्रियः।

मधुर्मधुकरः शूरो मधुरो मदनांतकः ।40।

झषरूपधरो देवो झषवृद्धिविवर्धकः।

यमशासनकर्ता च समपूज्यो यमाधिपः ।41।

निरंजनो निराधारो निर्लिप्तो निरूपाधिकः।

टंकायुधः शिवप्रीतष्टंकारो लांगलाश्रयः ।42।

निष्प्रपंचो निराकारो निरीहो निरूपद्रवः।

सपर्याप्रतिडामर्यो मंत्रडामरस्थापकः ।43।

सत्त्व-सत्त्वगुणोपेत सत्त्ववित्सत्त्ववित्प्रियः।

सदाशिवोह्युग्ररूपश्च पक्षविक्षिप्तभूभृत् ।44।

धनदो धननाथश्च धनधान्यप्रदायकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ नमो रुद्राय रौद्राय महोग्राय च मीढुषे।45।

नादज्ञानरतो नित्यो नादांत-पद-दायकः।

फलरूपः फलातीतः फल-अक्षर-लक्षणः।46।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वभूतान्यो भूतिहा भूतिभूषणः।

रुद्राक्षमालाभरणो रुद्राक्षप्रियवत्सलः।47।

रुद्राक्षवक्षो रुद्राक्षरूपो रुद्राक्षभक्षकः।

फलदः फलदाता च फलकर्ता फलप्रियः।48।

फलाश्रयः फलातीतः फलमूर्तिर्निरंजनः।

बलानंदो बलग्रामो बलीशो बलनायकः।49।

ॐ खें खां घ्रां ह्रां वीरभद्रः सम्राट्-दक्ष-मखांतकः।

भविष्यज्ञो भयत्राता भयकर्ता भयारिहा।50।

विघ्नेश्वरो विघ्नहर्ता गुरुर्देवशिखामणिः।

भावनारूपध्यानस्थो भावार्थ फलदायकः।51।

आं श्रां ह्रां कल्पित-कल्पस्थो कल्पना-पूरणालयः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

भुजंग-विलसत्कंठो भुजंगाभरणप्रियः।52।

ॐ ह्रीं ह्रूं मोहनोत्कर्ता छन्द मानसतोषकः।

नानानीतः स्वयं वान्यो भक्तमानंदसंश्रयः।53।

नागेन्द्र-चर्म-वसनो नारसिंह-निपातनः।

रकारो अग्निबीजस्थो अपमृत्युविनाशनः।54।

ॐ प्रें प्रें प्रें प्रें ह्रां दुष्टेष्टा मृत्युहा मृत्युपूजितः।

व्यक्तो व्यक्ततमो व्यक्तो रतिलावण्य-सुन्दरः।55।

रतिनाथो रतिप्रीतो निधनेशो धनाधिपः।

रमाप्रियकरो रम्यो लिंगो लिंगात्मविग्रहः।56।

ॐ क्ष्रों क्ष्रों क्ष्रों क्ष्रों ग्रहाकरो रत्नविक्रयविग्रहः।

ग्रहकृद् ग्रहभृद् ग्राही गृहाद् गृहविलक्षणः।57।

ॐ नमः पक्षिराजाय दावाग्निरूपरूपकाय घोरपातकनाशाय सूर्यलसुप्रभुः।58।

पवनः पावको वामो महाकालो महापहः।

वर्धमानो वृद्धिरूपो विश्वभक्तिप्रियोत्तमः।59।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ ह्रूं ह्रूं सर्वगः सर्वः सर्वजित्सर्वनायकः।

जगदेकप्रभुः स्वामी जगद्वंद्यो जगन्मयः।60।

सर्वान्तरः सर्वव्यापी सर्वकर्मप्रवर्तकः।

जगदानंददो जन्म-जरा-मरण-वर्जितः।61।

सर्वार्थसाधकः साध्य-सिद्धिः साधक-साधकः।

खट्वांगी नीतिमान्सत्यो देवतात्मात्मसंभवः।62।

हविर्भोक्ता हविः प्रीतो हव्यवाहनहव्यकृत्।

कपालमालाभरणः कपाली विष्णुवल्लभः।63।

ॐ ह्रीं (प्रवेश रोगाय) स्थूलास्थूलविशारदः।

कलाधीशस्त्रिकालज्ञो दुष्टावग्रहकारकः।64।

ॐ हुं हुं हुं हुं नटवरो महानाट्यविशारदः।

क्षमाकरः क्षमानाथः क्षमापूरितलोचनः।65।

वृषांको वृषभाधीशः क्षमासाधनसाधकः।

क्षमाचिंतनप्रीतस्थो वृषात्मा वृषभध्वजः।66।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ क्रों क्रों क्रों क्रों महाकायो महावक्षो महाभुजः।

मूलाधारनिवासश्च गणेशः सिद्धिदायकः।67।

महास्कंधो महाग्रीवो महद्वक्त्रो महच्छिरः।

महदोष्ठो महदार्यो महादंष्ट्रो महाहनुः।68।

सुंदरभ्रूः सुनयनः षटचक्रो वर्णलक्षणः।

मणिपूरो महाविष्णुः सुललाटः सुकंधरः।69।

सत्यवाक्यो धर्मवेत्ता प्रजासृजन-कारणः।

स्वाधिष्ठाने रुद्ररूपः सत्यज्ञः सत्यविक्रमः।70।

ॐ ग्लों ग्लों ग्लों ग्लों महादेव द्रव्य-शक्ति-समाहितः।

कृतज्ञः कृतकृत्यात्मा कृतकृत्यः कृतागमः।71।

ॐ हं हं हं हं गुरुरूपो हंस-मंत्रार्थ मंत्रकः।

व्रतकृद् व्रतविच्छ्रेष्ठो व्रतविद्वान्महाव्रती।72।

सहस्रारे-सहस्राक्षः व्रताधारो वृतेश्वरः।

वृतप्रीतो वृताकारो वृतनिर्वाणदर्शकः।73।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ ह्रीं ह्रूं क्लीं श्रीं क्लीं ह्रीं फट् स्वाहा।

अतिरागी वीतरागः कैलासोऽनाहतध्वनिः।

मायापूरकयंत्रस्थो रोगहेतुर्विरागवित्।74।

रागघ्नो रागशमनो लंबकाश्यभिषिंचनः।

सहस्रदलगर्भस्थः चंद्रिकाद्रवसंयुतः।75।

अंतनिष्ठो महाबुद्धिःप्रदाता नीतिवित्प्रियः।
नीतिकृन्नीतिविन्नीतिरंतर्याग-स्वयंसुखीन्।76।

विनीतवत्सलो नीतिस्वरूपो नीतिसंश्रयः।

स्वभावो यंत्रसंचार-स्तन्तुरूपोऽमलच्छविः।77।

क्षेत्रकर्मप्रवीणश्च क्षेत्रकीर्तनवर्धनः।

क्रोधजित्क्रोधनः क्रोधीजनवित् क्रोधरूपधृक्।78।

विश्वरूपो विश्वकर्ता चैतन्यो यंत्रमालिकः।

मुनिध्येयो मुनित्राता शिवधर्मधुरंधरः।79।

धर्मज्ञो धर्मसंबंधो ध्वान्तघ्नो ध्वांतसंशयः।

इच्छा-ज्ञान-क्रियातीत-प्रभावः पार्वतीपतिः।80।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

हं हं हं हं लतारूपः कल्पनावांछितप्रदः।

कल्पवृक्षः कल्पनस्थः पुण्यश्लोक-प्रयोजकः।81।

प्रदीप-निर्मल-प्रौढः परमः परमागमः।

ॐ ज्रं ज्रं ज्रं सर्वसंक्षोभ सर्वसंहारकारकः।82।

क्रोधदः क्रोधहा क्रोधी जनहा क्रोधकारणः।

गुणवान् गुणविच्छ्रेष्ठो वीर्यविद्वीर्यसंश्रयः।83।

गुणाधारो गुणाकारः सत्त्व-कल्याणदेशिकः।

सत्वरःसत्त्वदि्भावः सत्यविज्ञानलोचनः।84।

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लीं श्रीं ब्लूं प्रों ॐ ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा'।

वीर्याकारो वीर्यकरष्छंनमलो महाजयः।

अविच्छिन्न-प्रभावश्री वीर्यहा वीर्यवर्धकः।85।

कालवित्कालकृत्कालो बलप्रमथनो बली।

छिन्नपापश्चिछन्नपाशो विच्छिन्नभययातनः।86।

मनोन्मनो मनोरूपो विच्छिन्नभयनाशनः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

विच्छिन्नसंगसंकल्पो बलप्रमथनो बलः।87।

विद्याप्रदाता विद्येशः शुद्धबोधः सदोदितः।

शुद्धबोधो विशुद्धात्मा विद्यामात्रैकसंश्रयः।88।

शुद्धसत्त्वो विशुद्धांतविद्याविद्यो विशारदः।

गुणाधारो गुणाकारः सत्त्वकल्याणदेशिकाः।89।

सत्त्वरः सत्त्वसद्भावः सत्त्वविज्ञानलोचनः।

वीर्यवान्वीर्यविच्छ्रेष्ठः सत्त्वविद्यावबोधकः।90।

अविनाशो निराभासः विशुद्धज्ञानगोचरः।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौंः शिवं कुरु कुरु स्वाहा।

संसार-यंत्र-वाहाय महायंत्रपप्रतिने।91।

नमः श्रीव्योमसूर्याय मूर्ति वैचिन्च्यहेतवे।

जगज्जीवो जगत्प्राणो जगदात्मा जगद्गुरुः।92।

आनंदरूप-नित्यस्थः प्रकाशानंदरूपकः।

योग-ज्ञान-महाराजो योगज्ञान-महाशिवः।93।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अखंडानंददाता च पूर्णानंद-स्वरूपवान्।

वदायाविकाराय सर्वकारणहेतवे।94।

कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।

अघोरायाग्निनेत्राय दंडिने घोररूपिणे।95।

भिषग्गण्याय चंडाय अकुलीशाय शंभवे।

ह्रूं क्षुं रूं क्लीं सिद्धाय नमः।

घंडारवः सिद्धगंडो गजघंटा-ध्वनिप्रियः।96।

गगनाख्यो गजावासो गरलांशो गणेश्वरः।

सर्वपक्षि-मृगाकारः सर्वपक्षिमृगाधिपः।97।

चित्रो विचित्र संकल्पो विचित्रो विशदोदयः।

निर्भवो भवनाशश्च निर्विकल्पो विकल्पकृत्।98।

कक्षाविसलकः कर्त्ता कोविदः काश्मशासनः।

शुद्धबोधो विशुद्धात्मा विद्यामात्रैकसंश्रयः।99।

शुद्धसत्त्वो विशुद्धांत-विद्या-वैद्यौ विशारदः।

प्रलयानल कृद्धव्यः प्रलयानल शासनः।100।

त्रियंबकोऽरिषड् वर्गनाशको धनदः प्रियः।

अक्षोभ्यः क्षोभरहितः क्षोभदः क्षोभनाशकः।101।

ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रैं प्रौं प्रः मणिमंत्रौषधादीनां शक्तिरूपाय।

शंभवे अप्रेमयाय देवाय वषट् स्वाहा स्वधात्मने।102।

द्यौमूर्धा दशदिग्बाहुश्चन्द्रसूर्याग्निलोचनः।

पातालांघ्रिरिलाकुक्षिः खंमुखो गगनोदरः।103।

कलानादः कलाबिंदुः कलाज्योतिः सनातनः।

अलौकिकः कनोदारः कैवल्यपददायकः।104।

कौल्यः कुलेशः कुलजः कविः कर्पूरभास्वरः।

कामेश्वरः कृपासिन्धुः कुशलः कुलभूषणः।105।

कौपीनवसनः कांतः केवलः कल्पपादपः।

कुन्देन्दु शंखधवलो भस्मोद्धूलितविग्रहः।106।

भस्माभरण हृष्टात्मा तुष्टः पुष्टोऽरिषूदनः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

स्थाणुर्दिगंबरो भर्गो भगनेत्रभिदुज्जवलः।107।

त्रिकाग्निकालः कालाग्निरद्वितीयो महायशाः।

सामप्रियः सामकर्ता सामगः सामगप्रियः।108।

धीरो दांतो महाधीरो धैर्यदो धैर्यवर्धकः।

लावण्यराशिः सर्वज्ञः सुबुद्धिर्बुद्धिमद्वरः।109।

तारणाश्रय रूपस्थ स्तारणा श्रयदायकः।

तारक स्तारक स्वामी तारण स्तारण प्रियः।110।

एकतारो द्वितारश्च तृतीयो मंत्रआश्रयः।

एकरूपश्चैकनाथो बहुरूपः स्वरूपवान्।111।

लोकसाक्षी त्रिलोकेशस्त्रिगुणातीतमूर्तिमान्।

बालस्तारुण्य रूपस्थो वृद्धरूपप्रदर्शकः।112।

अवस्थात्रय भूतस्थो अवस्था-त्रयवर्जितः।

वाच्य वाचक भावार्थो वाक्यार्थ प्रियमानसः।113।

ओऽस्त्रो वाक्य प्रमाणस्थो महावाक्यार्थ बोधकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

परमाणु प्रमाणस्थः कोटिब्रह्माण्डनायकः।114।

ॐ हं हं हं हं ह्रीं वामदेवाय नमः

कक्षवित्पालकः कर्ता कोविदः कामशासनः।

कपर्दी केसरी कालः कल्पनारहिताकृतिः।115।

खं खेलः खेचरः ख्यातः खन्यवादी खमुद्गतः।

खांबरः खंडपरशुः खचक्षुः खंगलोचनः।116।

अखंडब्रह्म खंडश्रीरखंडज्योतिरव्ययः।

षट्चक्रखेलनः स्रष्टा षट्ज्योति-षट्गिरार्चितः।117।

गरिष्ठो गोपतिर्गोप्ता गंभीरो ब्रह्मगोलकः।

गोवर्धनगतिर्गोविद् गवावीतो गुणाकरः।118।

गंगधरोऽंगसंगम्यो गैंकारो गट्करागमः।

कर्पूरगौरो गौरीशो गौरी गुरु गुहाशयः।119।

धूर्जटिः पिंगलजटो जटामंडलमंडितः

मनोजवो जीवहेतुरंधकासुरसूदनः।120।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

लोकबन्धुः कलाधारः पाण्डुरः प्रमथाधिपः।
अव्यक्तलक्षणो योगी योगीशो योगिपुंगवः।121।

भूतावासो जनावासः सुरावासः सुमंगलः।
भववैद्यो योगिवैद्यौ योगीसिंहहृदासनः।122।
युगावासो युगाधीशो युगकृद्युगवन्दितः।
किरीटलेटिबालेन्दु मणिंककणभूषितः।123।
रत्नांगरागो रत्नेशो रत्नरंजितपादुकः।
नवरत्नगुणोपेत किरीटो रत्नकंचुकः।124।
नानाविधानेकरत्नलसत्कुण्डलमंडितः।
दिव्यरत्नगणोत्कीर्ण कंठाभरणभूषितः।125।
नवमालामणिर्नासापुटभ्राजित-मौक्तिकः।
रत्नांगुलीयविलसत्करशाखा-नखप्रभः।126।
रत्नभ्राजद्धेमसूत्र-लसत्कटितटः पटुः।
वामांगभागविसत्पार्वती वीक्षणः-प्रियः।127।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

लीलाविलंबितवपुर्भक्तमानसमंदिरः।
मंद-मंदार-पुष्पौघ-लसद्वायुनिषेवितः।।128।

कस्तूरी विलसत्फालो दिव्यवेष विराजितः।
दिव्यदेहप्रभाकूट-संदीपित-दिगंतरः।।129।

देवासुर गुरुस्तव्यो देवासुरनमस्कृतः।

हंसराजः प्रभाकूट पुण्डरीकनिभेक्षणः।।130।

सर्वाशाहगुणोमयः सर्वलोकेष्टभूषणः।

सर्वेष्टदाता सर्वेष्टस्फुरन्मंगलविग्रहः।।131।

अविद्यालेशरहितो नानाविद्यैकसंश्रयः।

मूर्तिभावःकृपापूरो भक्तेष्टफलपूरकः।।132।

संपूर्णकामः सौभाग्यनिधिः सौभाग्यदायकः।

हितैषी हितकृत्सौम्यः परार्थैकप्रयोजकः।।133।

शरणागत दीनार्तपरित्राणपरायणः।

विष्वंचिता वषट्कारो भ्राजिष्णुर्भोजनंहविः।।134।

भोक्ता भोजयिता जेता जितारिर्जितमानसः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अक्षरः कारणो रिद्धः शमदः शारदाप्लवः।135।

आज्ञापकश्च गंभीरः कतिर्दुःस्वप्ननाशनः।

पंचब्रह्म समुत्पत्तिः श्रेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः।136।

व्योमकेशो भीमवेषो गौरीपतिरनामयः।
भवाब्धितरणोपायोभगवान्भक्तवत्सलः।137।

वरो वरिष्ठ तेजिष्ठः प्रियाप्रियवधःसुधीः।

यंताऽयविष्ठः क्षोदिष्ठो यविष्ठो यमशासनः।138।

हिरण्यगर्भो हेमांगो हेमरूपो हिरण्यदः।
ब्रह्मज्योतिरनावेक्ष्यश्चामुण्डाजनको रवि।139।

मोक्षार्थीजनकःसेव्यो मोक्षदो मोक्षनायकः।

महाश्मशान-निलयो वेदाश्वाभूरथस्थिरः।140।

मृगव्याधो धर्मधामप्रच्छन्नस्फटिकःप्रभः।

सर्वज्ञः परमात्मा च ब्रह्मानंदाश्रयो विभुः।141।

शरभेशो महादेवः परब्रह्म सदाशिवः।

स्वराविकृतिकर्तार स्वरातीत स्वयंविभुः।142।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

स्वर्गतः स्वर्गतिर्दाता नियंता नियताश्रयः।

भूमिरूपो भूमिकर्ता भूधरो भूधराश्रयः।143।

भूतनाथो भूतकर्ता भूतसंहारकारकः।

भविष्यज्ञो भवत्राता भवदो भवहारकः।144।

वरदो वरदाता च वरप्रीतो वरप्रदः।

कूटस्थः कूटरूपश्च त्रिकूटो मंत्रविग्रहः।145।

मंत्रार्थो मंत्रगम्यश्च मन्त्रेंशो मंत्रभागकः।

सिद्धिमंत्रः सिद्धिदाता जपसिद्धिः स्वभावकः।146।

नामातिगो नामरूपो नामरूपगुणाश्रयः।

गुणकर्ता गुणत्राता गुणातीता गुणरिहा।147।

गुणग्रामो गुणाधीशः गुणनिर्गुणकारकः।

अकार-मातृकारूपो अकारातीतभावनः।148।

परमैश्वर्यदाता च परमप्रीतिदायकः।

परमः परमानंदः परानंदः परात्परः।149।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वैकुण्ठपीठमध्यस्थो वैकुण्ठो विष्णुविग्रहः।

कैलाशवासी कैलाशः शिवरूपः शिवप्रदः।150।

जटाजूटो भूषितांगो भस्मधूसरभूषणः।

दिग्वाससो दिग्विभागो दिंगतरनिवासकः।151।

ध्यानकर्ता ध्यानमूर्तिर्धारणाधारणप्रियः।

जीवन्मुक्तिपुरीनाथो द्वादशांतस्थितप्रभुः।152।

तत्त्वस्थस्तत्त्वरूपस्थस्तत्त्वातीतोऽति-तत्त्वतः।
तत्त्वासाम्यस्तत्त्वगम्यस्तत्त्वार्थ-सर्वदर्शकः।153।

तत्त्वासनस्तत्त्वमार्गस्तत्त्वांतस्तत्त्वविग्रहः।

दर्शनादतिगो दृश्यो दृश्यातीतोऽतिदर्शकः।154।

दर्शनो दर्शनातीतो भावनाकाररूपकृत्।

मणिपर्वतसंस्थानो मणिभूषणभूषितः।155।

मणिप्रीतो मणिश्रेष्ठो मणिस्थो मणिरूपकः।

चिंतामणिगृहांतस्थः सर्वचिंताविवर्जितः।156।

चिंताक्रांतो भक्तचिन्त्यो चिंतनाकार-चिंतकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अचिन्त्यश्चिन्त्यरूपश्च निश्चिन्त्यो निश्चयात्मकः।157।

निश्चयो निश्चयाधीशो निश्चयात्मकदर्शकः।
त्रिविक्रमस्त्रिकालज्ञस्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः।158।

ब्रह्मचारी व्रतप्रीतो गृहस्थो गृहवासकः।

परम्धाम परम्ब्रह्म परमात्मा परात्परः।159।

सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वसाक्षी विलक्षणः।

मणिद्वीपो द्वीपनाथो द्वीपांतो द्वीपलक्षणः।160।

सप्तसागरकर्ता च सप्तसागरनायकः।

महीधरो महीभर्त्ता महीपालो मनस्विनः।161।

महीव्याप्तो व्यक्तरूपः सुव्यक्तो व्यक्तभावनः।

सुवेषाढ्यः सुखप्रीतः सुगमः सुगमाश्रयः।162।

तापत्रयाग्निसन्तप्त समाह्लादन-चन्द्रमाः।
तारणस्तापसाराध्यस्तनुमध्यस्तमोमहः।163।

पररूपः परध्येयः परदैवतदैवतः।

ब्रह्मपूज्यो जगत्पूज्यो भक्तपूज्यो वरप्रदः।164।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अद्वैतो द्वैतश्चित्तश्च द्वैतोऽद्वैतविवर्जितः।

अभेद्यः सर्वभेद्यश्चभिद्यभेदकवेधकः।165।

लाक्षारसः सुवर्णाभः प्लवंगमप्रियोत्तमः।

शत्रूसंहारकर्ता च अवतारपरो हरः।166।

संविदेशः संविदात्मा संविज्ज्ञानप्रदायकः।

संवित्कर्ता च भक्तश्च संविदानंदरूपवान्।167।

संज्ञायातीत संहार्या सर्वसंशयहारकः।

निःसंशयो मनोध्येयः संशयात्मातिदूरगः।168।

शैवमंत्र शिवप्रीत दीक्षा शैवस्वभावकः।

भूपतिः क्ष्माकृतो भूपो भूप-भूपत्वदायकः।169।

सर्वधर्मसमायुक्तः सर्वधर्मविवर्धकः।

सर्वशास्त्रः सर्ववेदा सर्ववेता सतृप्तिमान्।170।

भक्तभावावतारश्च भुक्ति मुक्ति फलप्रदः।

भक्त सिद्धार्थ सिद्धिश्च सिद्धि-बुद्धि-प्रदायकः।171।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वाराणसी वासदाता वाराणसीवरप्रदः।

वाराणसी नाथरूपो गंगामस्तक धारकः।172।

पर्वताश्रयकर्ता च लिंग पर्वत त्र्यम्बकः।

लिंगदेहो लिंगपतिर्लिंगपूज्योऽतिदुर्लभः।173।

रुद्रप्रियो रुद्रसेव्य उग्ररूप विराड्कृत।

मालारुद्राक्षभूषांगो जपरुद्राक्षतोषकः।174।

सत्यसत्यः सत्यदाता सत्यकर्ता सदाश्रयः।

सत्यसाक्षी सत्यलक्ष्मी लक्ष्म्यातीतमनोहरः।175।

जनको जगताधीशो जनिता जननिश्चयः।

सृष्टिस्थितः सृष्टिरूपी सृष्टिरूप स्थितिप्रदः।176।

संहाररूपः कालाग्निः कालसंहाररूपकः।

सप्तपाताल पादस्थो महदाकाश शीर्षवान्।177।

अमृतो अमृताकारो अमृतामृतरूपकः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

अमृताकारचित्तिस्थः अमृतोद्भवकारणः।178।
अमृताहारनित्यस्थसत्वमृतोद्भवरूपिणः।
अमृतांशोऽमृताधीशोऽमृतप्रीतिविवर्धनः।179।

अनिर्देश्यो अनिर्वाच्यो अनंगो अंग आश्रयः।

श्रयेदः श्रेयरूपश्च श्रेयातीतफलोत्तमः।180।

सारः संसारसाक्षिश्च सारासार विचक्षणः।

धारणातीत भावस्थो धारणान्वयगोचरः।181।

गोचरो गोचरातीतो अतीवप्रियगोचरः।

प्रिय प्रिय तथा स्वार्थी स्वार्थः अर्थफलप्रदः।182।

अर्थार्थसाक्षी लक्षांशो लक्ष्यलक्षणविग्रहः।

जगदीशो जगत्त्राता जगन्मयोजगद्गुरुः।183।

गुरुमूर्तिः स्वयंवेद्यो वेद्यवेदकरूपकः।

रूपापीतो रूपकर्ता सर्वरूपार्थदायकः।184।

अर्थदस्त्वर्थमान्यच अर्थार्थी अर्थदायकः।

विभवो वैभवः श्रेष्ठः सर्ववैभवादायकः।185।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

चतुःषष्टि कलासूत्र चतुःषष्टिकलामयः।

पुराणश्रवणाकारः पुराणपुरुषोत्तमः।186।

पुरातन-पुराख्यातः पूर्वजः पूर्वपूर्वकः।

मंत्रतंत्रार्थसर्वज्ञः सर्वतंत्र प्रकाशकः।187।

तंत्रवेता तंत्रकर्ता तंत्रांतर निवासकः।
तंत्रगम्यस्तंत्रमान्यस्तंत्रयंत्रफलप्रदः।188।

सर्वतंत्रार्थतत्त्वज्ञस्तंत्रराजः स्वतंत्रकः।

ब्रह्माण्डकोटिकर्ता च ब्रह्मांडोदरपूरकः।189।

ब्रह्माण्डदेशदाता च ब्रह्मज्ञान परायणः।

स्वयंभूः शम्भुरूपश्च हंसविग्रह निस्पृहः।190।

श्वास-निःश्वास-उच्छ्वास-सर्वसंशयहारकः।

सोऽंहरूपः स्वभावश्च सोऽहंरूपप्रदर्शकः।191।

सोऽहमस्मीति नित्यस्थः सोऽहं-हंसः-स्वरूपवान्।

हंसोहंसः-स्वरूपश्च हंसविग्रह-निस्पृहः।

श्वास-निश्वास-उच्छ्वासः पक्षिराजो निंरजनः।192।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

।।फलश्रुति।।

अष्टाधिकसहस्रन्तु नाम साहस्रमुत्तमम्।
नित्यं संकीर्तनासक्त कीर्तयेत्पुण्यवासरे।193।
संक्रांतौ विषुवे चैव पौर्णमास्यां विशेषतः।
अमावस्यां रविवारे त्रिःसप्तवारपाठकः।194।
स्वप्ने दर्शनमाप्नोति कार्याकार्येऽपि दृश्यते।
रविवारे दशावृत्या रोगनाशो भविष्यति।195।
सर्वदा सर्वकामार्थी जपेदेतत्तु सर्वदा।
यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां-कुलनाशनम्।196।
भोग-मोक्षप्रदं श्रेष्ठं भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वापस्मारनाशनम्।197।
राजचौरारि-मृत्युनां-नाशनं जयवर्धनम्।
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्।198।
उदङ्मुखः सहस्रं तु रक्षाणाय जपेन्निशि।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

पठतां शृण्वतां चैव सर्वदुःखविनाशकृत्।199।

धन्यं यशस्यमायुष्यमारोग्यं पुत्रवर्धनम्।

योगसिद्धिं सम्यक् शिवं ज्ञानप्रकाशितम्।200।

शिवलोकैकसोपानं वांछितार्थैकसाधनम्।

विषग्रह क्षयकरं पुत्रपौत्राभिवर्धनम्।201।

सदा दुःस्वप्नशमनं सर्वोत्पातनिवारणम्।

यावन्न दृश्यते देवि शरभो भयनाशकः।202।

तावन्न दृश्यते जाप्यं बृहदारण्यको भवेत्।

सहस्रनाम नाम्न्यस्मिन्नैकैकोच्चारणात्पृथक्।203।

स्नातो भवति जाह्नव्यां दिव्यां दृष्टिः स्थिरो भुवि।

सहस्रनाम सद्विद्यां शिवस्य परमात्मनः।204।

यो निष्ठास्यति कल्पान्ते शिवकल्पो भविष्यति।

हिताय सर्वलोकानां शरभेश्वर भाषितम्।205।

स ब्रह्मा स हरिः सोऽर्कः स शक्रो वरुणो यमः।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

धनाध्यक्षः स भगवान् सचैकः सकलं जगत्।206।

सुखाराध्यो महादेवस्तपसा येन तोषितः।

सर्वदा सर्वकामार्थं जपेत्सिध्यति सर्वदा।207।

धनार्थी धनमाप्नोति यशोर्थी यशमाप्नुयात्।

निष्कामः कीर्तयेन्नित्यं ब्रह्मज्ञानमयो भवेत्।208।

बिल्वैर्वा तुलसीपुष्पैश्चंपकैर्बकुलादिभिः।

कल्हारैर्जातिकुसुमैरंबुजैर्वा तिलाक्षतैः।209।

एभिर्नाम सहस्रैस्तु पूजयेद् भक्तिमान्नरः।

कुलं तारयते तेषां कल्पे कोटिशतैरपि।210।

ये एक हजार आठ नाम सभी सहस्रनामों में श्रेष्ठ कहे गये हैं। ये धन, यश, आयु, आरोग्य, पुत्रवर्धन हैं। संक्रान्ति, विषुव पूर्णिमा, अमावस्या व रविवार में जो उच्च साधक तीन या सात बार पाठ करता है, वह स्वप्न में कार्याकार्य का ज्ञान प्राप्त करता है। रविवार में दश बार पाठ करने से रोगों का नाश होता है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

निरन्तर जप से शत्रुकुल व अभिचारिक दोष का शमन होता है। सभी प्रकार के मृगी रोगों का नाश होता है। मारण में सात रातों तक दक्षिण की ओर मुख करके साध्य का ध्यान करते हुए पाठ करना चाहिये। रक्षण के लिये उत्तर की ओर मुख करके रात में पाठ करें। जो भक्त प्रत्येक नाम से कल्हार जातिपुष्प, कमलपुष्प, अक्षत या तिल से अर्चन करता है, वह सौ करोड़ कल्पों तक अपने कुल को तार देता है। यह पाठ साधक को दुःखों व भय से मुक्त कर भोग मोक्ष प्रदान करता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

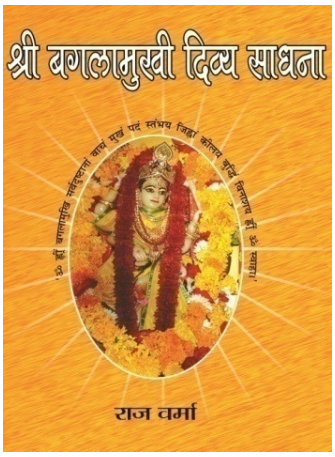

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com